# सांस्कृतिक पहचान (Cultural Identity)

*Vivian Hsueh-Hua Chen*
*Assistant Professor, Nanyang Technological University, Singapore*

## यह क्या है?

सांस्कृतिक पहचान, राष्ट्रीयता, जातीयता, जाति, लिंग और धर्म सहित विभिन्न सांस्कृतिक श्रेणियों के आधार पर एक विशेष समूह के साथ पहचान, या संबंधित होने की भावना को दर्शाती है। सांस्कृतिक पहचान का निर्माण और रखरखाव किया जाता है, जिसमें सामूहिक ज्ञान जैसे परंपराएं, विरासत, भाषा, सौंदर्यशास्त्र, मानदंड और रीति-रिवाजों को साझा करने की प्रक्रिया है। सामूहिक ज्ञान जैसे परंपराएं, विरासत, भाषा, सौंदर्यशास्त्र, मानदंड और रिवाज को साझा करने की प्रक्रिया से सांस्कृतिक पहचान को निर्मित किया और बनाए रखा है। हालांकि पूर्व विद्वानों ने सांस्कृतिक समूहों के साथ स्पष्ट और स्थिर होने की पहचान ग्रहण की थी, लेकिन आज इसे सबसे अधिक प्रासंगिक और अस्थायी और स्थानिक परिवर्तनों पर निर्भर करता है। वैश्विक सांस्कृतिक संघर्ष में वृद्धि के साथ वैश्वीकृत दुनिया में सांप्रदायिक प्रथाओं के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान लगातार लागू की जाती है, बातचीत की जाती है, रखी जाती है और चुनौती दी जाती है।

## इस विचार का उपयोग कौन करता है?

सांस्कृतिक पहचान की अवधारणा विद्वानों द्वारा मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषयों में विशेष रूप से संचार और सांस्कृतिक अध्ययनों सहित, लेकिन मनोविज्ञान, इतिहास, भाषाविज्ञान और क्षेत्रीय अध्ययनों के अलावा, अन्य लोगों के बीच उपयोग किया जाता है। संचार और सांस्कृतिक अध्ययन में विद्वान सांस्कृतिक पहचान के परिणाम और गठित तत्व दोनों के रूप में संवादात्मक साधनों और प्रथाओं की जांच करते हैं। अकादमिक के बाहर, सांस्कृतिक पहचान की अवधारणा बहुसंख्यक समाजों में गैर-सरकारी संगठनों द्वारा नस्लीय और जातीय रूप से हाशिए वाले समूहों की पहचान और जश्न मनाने के तरीके के रूप में अक्सर उपयोग की जाती है।

## अंतर-सांस्कृतिक संवादके साथ क्या यह ठीक बैठता है?

एक अद्वितीय सांस्कृतिक संदर्भ में दूसरों के संबंध में एक की सांस्कृतिक पहचान बनाई जाती है। सभी सांस्कृतिक पहचान दूसरों की उपस्थिति और सांस्कृतिक प्रथाओं को पहचानने के द्वारा परिभाषित की जाति है
सांस्कृतिक पहचान के निर्माण के लिए सांस्कृतिक संवाद आवश्यक है क्योंकि यह व्यक्तियों को समानताएं देखने और दूसरों से मतभेद देखने और उनको परिभाषित करने के लिए प्रोत्साहित करता है कि वे कौन हैं। सांस्कृतिक संवाद एक चुनौतीपूर्ण स्थान का उत्पादन करता है जहां सांस्कृतिक पहचान को लगातार पुनर्निर्धारित और तय किया जाता है।

## और क्या काम बचा है?

सांस्कृतिक पहचान की अवधारणा का मुख्य रूप से आधुनिक पश्चिमी उपनिवेशवाद के इतिहास के साथ बहुसांस्कृतिक समाजों और समाजों में अध्ययन किया



Originally published in 2014; translated into Hindi in 2017.

गया है। 1 9 60 और 1 9 80 के दशक में पहचान और राजनीति से संबंधित नागरिक अधिकारों के आंदोलन से प्रभावित प्रासंगिक सिद्धांतों और अनुभवजन्य अध्ययनों के उत्पादन के केंद्र में अमेरिका और ब्रिटेन का केंद्र रहा है। नतीजतन, सांस्कृतिक पहचान के मौजूदा अध्ययन दुनिया के अन्य भागों में सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को प्रदर्शित नहीं करते हैं। एशिया उन क्षेत्रों में से एक है जो कई एशियाई देशों में अपेक्षाकृत समरूप जनसंख्या के दायरे से बाहर गिर गया है। गैर-पश्चिमी संस्कृतियों में निहित देशी ज्ञान को साझा करने और साझा करने से अवधारणा को और सुधार होगा।

## Resources

Fong, M., & Chuang, R. (Eds.) (2004). *Communicating ethnic and cultural identity*. Lanham, MD: Rowman & Littlefield.

Kim, Y. Y. (2007). Ideology, identity, and intercultural communication: An analysis of differing conceptions of cultural identity. *Journal of Intercultural Communication Research, 36*(3), *237-253.*

Miike, Y. (2007). Theorizing culture and communication in the Asian context: An assumptive foundation. *Intercultural Communication Studies, 11*(1), 1-21.

अनुवादक: नृपा व्यास (बड़ौदा, भारत)



Originally published in 2014; translated into Hindi in 2017.